ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(11): 150-152
www.allresearchjournal.com
Received: 02-09-2021
Accepted: 04-10-2021

तगाराम कोंडलराव
एसिस्टैंट प्रोफेसर इन, एजुकेशन दयालबाग, एजुकेशनल इंस्टिट्यूट आगरा, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
तगाराम कोंडलराव
एसिस्टैंट प्रोफेसर इन, एजुकेशन दयालबाग, एजुकेशनल इंस्टिट्यूट आगरा, उत्तर प्रदेश भारत

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्तर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

तगाराम कोंडलराव

सारांश
उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक स्तर के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। मनौविज्ञान एवं शिक्षाशास्त्री व्यावसायिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को अधिक बढ़ाने के लिए जागरूक हो सकते हैं। वह विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए स्वस्थ वातावरण तथा सुविधाएं प्रदान कर सकते हैं।

कूटशब्द: व्यावसायिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर, व्यावसायिक स्तर, मनौविज्ञान, प्रति अभिवृत्ति

प्रस्तावना
व्यवसाय मानव जीवन का एक आवश्यक पक्ष है जिसके आधार पर मानवीय क्रियाकलाप तथा गतिविधियां सुचारू रूप से गतिश शिल होती हैं। मनुष्य जीवन का सुनश्चय भी व्यवसाय करता है। व्यवसाय सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक प्रमुख कारक है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सामाजिक दक्षता अथवा कार्यकुश शिलता उत्पन्न करना है जिससे कोई व्यक्ति दूसरे पर आश्रित न रहे। वास्तव में व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य व्यवसाय प्राप्त करना है। जीविकोपार्जन से मनुष्य को मात्र आत्मसन्तोष ही प्राप्त नहीं होता वरन् इससे मानसिक शान्ति भी प्राप्त होती है। साथ ही साथ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सामाजिक दक्षता अथवा कार्यकुश शिलता उत्पन्न करना है जिससे कोई व्यक्ति दूसरे पर आश्रित न रहे। शिक्षा सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति का साधन भी है। व्यवसाय का महत्व व्यक्ति व सामाजिक दृष्टिकोण से है। यूनेस्को के अनुसार व्यवसायीकृत शिक्षा में सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षा के वे पक्ष भी निहित हैं जो आर्थिक व सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय से सम्बन्धित ज्ञानों के अध्ययन तथा व्यवहार कौशलों व अभिरूचि, बोध तथा ज्ञान की प्राप्ति से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार की शिक्षा सामान्य शिक्षा का एक अभिन्न अंग व्यवसाय क्षेत्र में आने के लिए तैयारी का एक साधन तथा सतत शिक्षा का एक पक्ष होगी। व्यावसायीकरण से अभिप्राय व्यवसायोन्नमुख शिक्षा प्रदान करने से है। आर्थिक व सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित व्यवसायों के लिए आवश्यक तकनीकों का ज्ञान प्रदान करना तथा विभिन्न कौशलों को व्यवहारिक रूप से सीखना ही शिक्षा का व्यावसायीकरण है। शिक्षा के व्यावसायीकरण का अर्थ मात्र व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने तक सीमित नहीं है, वरन् व्यवसायीकृत शिक्षा की सहायता से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है।

समस्या का प्रादुर्भाव
वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा अनिवार्य है क्योंकि यांत्रिकीय नवीनताएं समाज के औद्योगिक एवं सामाजिक संगठन को प्रस्तुत कर चुकी हैं। बिना व्यावसायिक शिक्षा के रहा नहीं जा सकता। किसी राष्ट्र को सम्पूर्ण शिखर पर ले जाने के लिए उस राष्ट्र का सामाजिक, नैतिक, तकनीकी संसाधनों से युक्त होना परम आवश्यक है। यह भी मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि समाज के उत्थान का मानदण्ड समाज के व्यक्ति होते हैं। अतः व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाए कि वह अपने सर्वांगीण विकास के साथ राष्ट्र को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सके। इस हेतु मनुष्य की शारीरिक, मानसिक अनुकूलता के साथ व्यावसायीकरण होना अनिवार्य है। क्योंकि व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति सैद्धान्तिक, तकनीकी व प्रयागोत्मक ज्ञान प्राप्त कर अपने कार्य विषेष में निपुण बनता है। अतः शोधकत्री को यह देखना है कि विभिन्न क्षेत्रों में दी जाने वाली व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न आयामों, यांत्रिकी शिक्षा के विभिन्न आयामों, मैनेजमेन्ट से सम्बन्धित विभिन्न आयाम, टेक्नालॉजी आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षण लेने वाले विद्यार्थियों की व्यवसाय के अभिवृत्ति क्या है। इन सभी आयामों को ध्यान में रखते हुए शोधकत्री ने इस विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक स्तर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

व्यावसायिक शिक्षा

व्यावसायिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा स्त्री–पुरूष को परिपूर्ण व उत्तरदायी कार्यों के लिए तैयार किया जाता है। इसके लिए पर्याप्त सूचना प्राप्ति तथा अनुशासित अन्तर्दृष्टि व उच्चकोटि की दक्षता की आवश्यकता होती है। शिक्षा आयोग (1964–66)

कियात्मक परिभाषा

व्यावसायिक शिक्षा से तात्पर्य किसी विषेष व्यवसाय से सम्बन्धित सम्पूर्ण तकनीकी प शिक्षण प्रदान करना है जिससे व्यक्ति अपनी कार्यकुश शिालता व गुणवत्ता को ध्यान में रखकर कर सके।

माध्यमिक स्तर

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक स्तर को दो भागों में विभाजित किया गया है

क. निम्न माध्यमिक स्तर कक्षा 9 व 10

ख. उच्च माध्यमिक स्तर कक्षा 11 व 12

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर से आशय कक्षा 11वीं पास किए हुए विद्यार्थी से है।

अभिवृत्ति का आशय व्यक्ति का किसी वस्तु, घटना या विचार के प्रति अनुकूलित या प्रतिकूलित व्यवहार का प्रदर्शन है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत अध्ययन आगरा शहर के दयालबाग क्षेत्र तक ही सीमित रहा।
2. प्रस्तुत अध्ययन दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट के वूमैन्स पॉलीटेक्नीकल एवं टेक्नीकल कॉलेज तक ही सीमित रहा।
3. प्रस्तुत अध्ययन 120 छात्र–छात्राओं तक ही सीमित रहा।

सम्बन्धित साहित्य

साधु ,जे.एस. (2012) शिक्षकों की शैक्षिक स्वतंत्रता व समायोजन के महत्व सम्बन्ध का अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की शैक्षिक स्वतंत्रता व व्यावसायिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना। न्यादर्ष के लिए 60 शिक्षकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया गया। शोध के लिए सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि शिक्षकों की शैक्षिक स्वतंत्रता व व्यावसायिक समायाजेन मे कोई सार्थक अन्तर नही है। सुशिल (2010) कोटद्वार महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं का पर्यावरणीय अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन में दो उद्देश्य को लिया गया। अध्ययन का पहला उद्दश्य कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा दूसरा उद्देश्य विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध के लिए वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध मे न्यादश के लिए गढ़वाल उत्तरांचल के स्नातक कला तथा विज्ञान वर्ग के प्रथम वर्ष के 40 छात्र, 40 छात्रओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि सभी वर्गों की छात्राओं की रूचि छात्रो की अपेक्षा अधिक है तथा कला वर्ग के छात्र–छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नही है। फ्रान्सिस, जॉन (2012) कम्प्यूटर से अनभिज्ञ छात्रों की अभिवृत्ति तथा तार्किक योग्यता का अध्ययन में दो उद्देश्य को लिया गया। अध्ययन का पहला उद्देशय कम्प्यूटर जानने वाले छात्रों की अभिवृत्ति एवं तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना, अध्ययन का दूसरा उद्देश्य कम्प्यूटर न जानने वाले छात्रों की अभिवृत्ति एवं तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध में न्यादशश्के लिए जगदलपुर शहर के 7 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों का चयन किया जिनमें कम्प्यूटर जानने वाले 75 लड़के और 75 लड़की, कम्प्यूटर न जानने वाले 75 लड़के और 75 लड़कियों का चयन किया गया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि कम्प्यूटर जानने वालों की अभिवृत्ति एवं तार्किक क्षमता तथा कम्प्यूटर न जानने वालों से अधिक पायी गयी तथा कम्प्यूटर जानने वालों की अभिवृत्ति एवं तार्किक क्षमता में उच्च सह–सम्बन्ध पाया गया।

अध्ययन की विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से है। समस्या की प्रकृति के अनुसार शोधकत्री ने प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रदत्तों का एकत्रण ही नहीं किया जाता अपितु उनका विश्लेषण, तुलना व व्याख्या भी की जाती है।

न्यादर्शा का चयन

आगरा शहर के दयालबाग शिक्षण संस्थान के विद्यालयों का चयन उच्च माध्यमिक स्तर पर 120 विद्यार्थियों का चयन सामान्य याद्दच्छिक विधि से किया गया–

वूमैन्स पॉलीटेक्नीकल कॉलेज छात्राऐं (60)
टेक्नीकल कॉलेज छात्र (60)
इलेक्ट्रिकल ब्रान्च छात्राऐं (20)
इलेक्ट्रिकल ब्रान्च छात्र (20)
इलेक्ट्रॉनिक ब्रान्च छात्राऐं (20)
इलेक्ट्रॉनिक ब्रान्च छात्र (20)
ऑटोमोबाइल ब्रान्च छात्राऐं (20)
ऑटोमाबेाइल ब्रान्च छात्र (20)

उपकरण – व्यावसायिक अभिवृत्ति शोधकत्री ने शोध मध्यता हेतु डा. मन्जू मेहता द्वारा बनाये हुए व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी का चयन किया गया।

उपकरण का औचित्य

डा. मन्जू मेहता द्वारा बनाये गये इस परीक्षण का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को जानना है।

उपकरण का विवरण

इस परीक्षण में व्यावसायिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित 20 कथन दिए गए हैं। जिनमें प्रत्येक कथन के लिए हाँ /नहीं का विकल्प है। सही के लिए हाँ के सामने (अ) का चिन्ह लगाना है तथा गलत के लिए नहीं के सामने (ग) का चिन्ह लगाना है।

1. लेखक का नाम – डा. मन्जू महेता
2. भाषा – हिन्दी
3. कथन – 20
4. वैधता – निकष वैधता 0.875
5. विष्वसनीयता – सहसम्बन्ध गुणांक 0.875

परीक्षण का प्रषासन

न्यादर्श पर उपकरण का प्रशासन शोधकत्री द्वारा स्वयं किया गया। शोधकत्री द्वारा छात्रों को प्राथमिक उपकरण सूचना भरने का निर्देशा दिया गया। उसके बाद छात्रों को उपकरण पर लिखे निर्देशों की जानकारी प्रदान की गई। छात्रों को 5 मिनट का समय उपकरण भरने के लिए प्रदान किया गयज्ञं

प्रदत्तों के विशलेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राओं की व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन व्यवसायिक उपकरण द्वारा सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण किया गया जिसमें मध्यमान, मानक विचलन व कान्तिक अनुपात की गणना की गई। जिन्हें निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है–

तालिका 1: छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति का सांख्यिकीय मान–

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	कान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	60	13.83	2.76	3.72	>0.05
छात्रा	60	13.17	2.64		>0.01

उपरोक्त तालिका का अवलाकेन करने से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का व्यवसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 13.83 तथा मानक विचलन 2.76 पाया गया तथा छात्राओं का मध्यमान 13.17 तथा प्रमाणित विचलन 2.64 पाया गया। जिससे यह ज्ञात होता है कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति छात्रो की अभिवृत्ति छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति से अधिक पाई गयी तथा दोनों समूहो के सार्थक अन्तर की जाँच करने के लिए टी परीक्षण निकाला गया जिसमें टी परीक्षण का मान 3.72 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से भी कम है। इसलिए शाधार्थिनी द्वारा बनायी गयी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ

1. साहब, डॉ. लाल (1984) मापन, मल्याकंन एंव सांख्यिकी, डिस्कवरी, पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
2. गैरिट हनैरी इ. (1986), स्टेटिस्टिकस इन साइकालॉजी एण्ड एजूकेशन, लीगमेन्स, ग्रीन एण्ड कम्पनी न्यूयार्क।
3. जायसवाल, डा. सीताराम, (1992) शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्शा आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. शर्मा डॉ. आर. ए. एवं चतुर्वेदी, डा. शिखा, (1996), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्शा, मेरठ लायल बुक डिपो।
5. गुडबार एवं स्केटस, (1996), मैथडोलॉजी ऑफ रिसर्च साइकालॉजी, सैन्चुरी न्यूयार्क।
6. पाण्डेय के. पी. (1999) शैक्षिक अनुसंधान विशवविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. शर्मा डॉ. आर. ए. (2001), शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो मरेठ।
8. कॉल लौकेश (2004), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली –विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।
9. राजकुमार, रीता, (2008) आपेन वाकेशनल ऑफ एन.ओ.एस. एण्ड ई लर्निंग, नेशानल पॉलीसी ऑन डवलपमेंट ई. लर्निंग।
10. गोयल विजय, (2008) ए स्टडी ऑन टेक्नीकल एण्ड वोकेशनल एण्ड ट्रेनिंग सिस्टम , प्लानिंग कमीशन इण्डिया।
11. गुप्ता प्रोफेसर एस. पी. एवं गुप्ता डॉ अलका, (2010), सांख्यिकीय विधियॉ।
12. प्रतिमा आस्कर, (2011), सरकारी एव गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का अपने व्यवसाय के शिक्षकों का अपने व्यवसाय के प्रति कृत्य संतोष का अध्ययन।
13. हिल, विलियम, (2012) यूसिंग टेक्नालॉजी टू एन्करेज स्टूडेन्ट मोटीवेशान एण्ड लर्निंग।